आरती श्री लक्ष्मी जी की

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशिदनि सेवत, हर विष्णु धिाता ॥ टेक ॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही हो जग-माता ।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ ॐ जय... ॥
दुर्गा रुप निरिंजनि, सुख-सम्पत्ति दाता ।
जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता ॥ ॐ जय... ॥
तुम ही पाताल बसंती, तुम ही शुभदाता ।
कर्म प्रभाव प्रकाशनि, भवनधि की त्राता ॥ ॐ जय... ॥
जसि घर में तुम रहती, सब सद्गुण आता ।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता ॥ ॐ जय... ॥
तुम बनि यज्ञ न होवे, वस्त्र न कोई पाता ।
खान पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥ ॐ जय... ॥
शुभ-गुण मंदरि सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बनि, कोई नहीं पाता ॥ ॐ जय... ॥
श्री महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ ॐ जय... ॥